09 / 01 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

संपूर्ण समर्थ संकल्पों की अनुभूति

➢➢ पुरुषार्थ के प्रति समर्थ संकल्प

➳ _ ➳ मैं तीव्र पुरुषार्थी आत्मा हूं

➳ _ ➳ सदा उड़ती कला का अनुभव करने वाली

➳ _ ➳ उड़ता पंछी हूं

→ बाबा की याद मेरा स्वधर्म है

→ अपने पिता को याद करना

→ मुझ बच्चे का धर्म है

◆ मैं कलप कलप की सहयोगी आत्मा हूं

◆ अपने इस अंतिम जन्म की बलिहारी है

◆ जो बाबा ने मुझे अपना बना लिया

● मैं आत्मा इस पुराने शरीर द्वारा

● जन्म -जन्म का वर्सा पा रही हूं

● वाह मेरा अंतिम जन्म

● वाह मेरी यह पुरानी देह

● जिस द्वारा मैं बाप से मिलन मनाती हूं

➳ _ ➳ इन नैनो की बलिहारी

→ जो इन द्वारा मैं बाबा को देखती हूं

→ परमात्म महावाक्य पढ़ती हूं

➳ _ ➳ इन कानो की बलिहारी

→ जिन द्वारा अमृत रस ग्रहण करती हूं

➳ _ ➳ इन हाथों का शुक्रिया

→ जो यज्ञ सेवा करते है

➳ _ ➳ इन पैरों का धन्यवाद

→ जो चलकर बाबा के पास जाती हूँ

➳ _ ➳ इस मुख की बलिहारी

→ जो बाबा का गुणगान करता है

➳ _ ➳ मैं परमात्मा का सिकलिधा बच्चा हूं

➳ _ ➳ जो बाबा मेरी उन्नति के लिए

➳ _ ➳ भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के पेपर देते हैं

→ यह परिस्थितियां मुझे अनुभवी बना रही हैं

→ सहनशीलता का पाठ पक्का करा रही हैं

→ माया का है यह रूप मेरा सहयोगी है

◆ जो मुझे अंगद के समान

◆ अटल अडोल बना रही है

➢➢ इस मीठे ब्राह्मण परिवार का शुक्रिया

➳ _ ➳ बलिहारी इस न्यारे प्यारे ब्राह्मण परिवार की है

➳ _ ➳ हम सब आत्माएं एक दूसरे की सहयोगी हैं

→ कर्मों की इस गहन गति को

→ मुझ आत्मा ने अच्छी रीती जान लिया है

→ कि मेरा यह ब्राह्मण परिवार

→ मुझ आत्मा को धरमराज पूरी की

→ सजाओ से बचा रहा है

- इस श्रेष्ठ जीवन में मेरे सारे हिसाब किताब
- ब्राह्मण परिवार द्वारा चुकता हो रहे हैं
  - मैं संपूर्ण संपन्न आत्मा बनती जा रही हूं
- बाबा भिन्न-भिन्न आत्माओं को निमित्त बनाएं
  - मेरी उन्नति करा रहा है
  - मैं संपूर्ण हलका बन
  - पुरुषार्थ की इस रेस में
  - उड़ती जा रही हूं